मौर्य शासक सम्राट अशोक के अभिलेख

भाग:-4

डॉ विभूति भूषण

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

अशोक के अभिलेख से संबंधित महत्वपूर्ण बातें

अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम फिरोजशाह तुगलक के समय पढने की कोशिस की गई थी लेकिन सफलता नहीं मिली. 1837 में सर्वप्रथम जेम्स प्रिन्सेप ने इसे पढ़ा था.

अशोक के अभिलेख में उसके मूल नाम का अधिकांशतः उल्लेख नहीं है. केवल चार अभिलेखों में इसका मूल नाम मिलता है. ये है - 1. मास्की (कर्नाटक) 2. नितूर (कर्नाटक) 3. उदेगोलम (कर्नाटक) 4. गुर्जरा (मध्य प्रदेश)

अपने अभिलेखों में अशोक ने खुद के लिए देवानामप्रिय (देवताओं का प्यारा) अधिग्रहण किया है. ऐसी ही उपाधि उसके पौत्र दसरथ तथा उसके श्रीलंकाई समकालीन शासक तिस्स भी लगाते थे.

अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत, यूनानी एवं आरामाईक थी. जबकि लिपि ब्राह्मी, यूनानी, आरामाईक एवं खरोष्ठी थी.

अशोक के समय तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ लेकिन इसकी सुचना उसने अभिलेख में कहीं भी नहीं दी है.

अशोक ने राज्य के उछ पदों पर जनता के सभी वर्गों की नियुक्तियां की. उसने किसी के साथ भेदभाव नहीं किया. यहाँ तक की यूनानियों (यूनानी तुषास्फ उसके समय पश्चिमी प्रान्त का गवर्नर था) तथा स्त्रियों (इतिझाक महामात्र) को भी उच्च पद प्रदान किये.